तर्ज-साजन मेरा उस पार है
जिनको धनी पे एतबार है,
मिलता उन्हीं को ये प्यार है

1- बीत गया है ग़म जुदाई का,
अब हमको डर कैसा तन्हाई का
रूहों को जिसका इन्तजार है,
आज मिली वोह बहार है

2- जिनकी चाहत में अखियां तरसी हैं,
जिनसे मिलने को बरसों बरसी हैं
आज हुआ उनका दीदार है,
जो हमारे सरकार हैं

3- जलवा वोह नूरी जब दिखायेंगे,
इक दूजे में हम खो जायेंगे
चरणों में उनके ही करार है,
अंगना धनी पे निसार है

Nijanand App